**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

# महिला सशक्तिकरण और महिलाओं के लिए संचार के साधनों को बढ़ावा देना

**Dr. PRAKASH CHAND MEENA**

**PROFESSOR IN POLITICAL SCIENCE**

**GOVT. COLLEGE RAJGARH (ALWAR)**

## सार

*भारत आर्थिक और तकनीकी रूप से तेजी से विकास कर रहा है, फिर भी यहाँ महिलाओं के साथ भेदभाव जारी है। गैरकानूनी कन्या भ्रूण हत्या बढ़ने के साथ, सरकार को समाज में बढ़ते असंतुलन को रोकने की जरूरत है। सच्चा सशक्तिकरण तभी होगा जब महिलाएं हमारे देश की निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेंगी। जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, "महिलाओं की स्थिति देखकर आप देश की स्थिति बता सकते हैं।" हमारी प्रबल पितृसत्तात्मक व्यवस्था महिलाओं को चाहकर भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पर्याप्त अवसर प्रदान नहीं करती है। मुख्यधारा और महिला सशक्तिकरण मानव विकास के केंद्र में है। महिलाओं का सशक्तिकरण तभी हो सकता है जब उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार हो। यह केवल महिलाओं के संपूर्ण विकास की दृष्टि से निश्चित सामाजिक और आर्थिक नीतियों को अपनाने और उन्हें यह एहसास दिलाने से ही संभव हो सकता है कि उनमें मजबूत इंसान बनने की क्षमता है। संचार साधन सामाजिक संरचनाओं को गहराई से प्रभावित कर रहे हैं। विशेष रूप से, संचार प्रौद्योगिकियाँ महिलाओं के लिए अवसर पैदा कर रही हैं, जिससे वे अभूतपूर्व पैमाने पर राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं में भाग लेने में सक्षम हो रही हैं। हालाँकि, लैंगिक समानता को सक्षम करने में संचार जो भूमिका निभा सकता है, वह पहुँच, कम साक्षरता और महिलाओं द्वारा संचार प्रौद्योगिकी के सीमित उपयोग के कारण बाधित है। यह लेख हमारे देश में महिलाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझने पर प्रकाश डालता है क्योंकि वे संचार साधनों की बढ़ती उपलब्धता का बेसब्री से इंतजार करती हैं।*

***मुख्य शब्द***: *सशक्तिकरण, सामाजिक और आर्थिक नीतियां*

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

## परिचय

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए प्रत्येक समाज में महिलाओं की धारणा और उनसे अपेक्षाओं में एक व्यापक, गतिशील और लोकतांत्रिक परिवर्तन की आवश्यकता होती है। महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद करना इस तरह के बदलाव की पहली प्राथमिकता है। पीने का पानी, ताजी हवा, हल्का स्वच्छ वातावरण, आवास, संचार, परिवहन, शिक्षा और बुनियादी स्वास्थ्य जैसी सुविधाएँ बुनियादी ज़रूरतें हैं। सशक्तीकरण की ओर ले जाने वाली प्रक्रिया के लिए महिलाओं की जरूरतों की वैज्ञानिक धारणा आवश्यक है।

भारत में अंतर्राष्ट्रीय महिला दशक में महिलाओं की भूमिकाओं का पुनर्मूल्यांकन करने, सूचना आधार का विस्तार करने, महिलाओं की समानता और विकास के लिए वैकल्पिक रणनीति की खोज करने और महिलाओं की विशिष्ट समस्याओं और जरूरतों को संबोधित नीतियों और कार्यक्रमों को विकसित करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों से अभूतपूर्व प्रयास देखे गए। यह राष्ट्रपिता द्वारा प्रतिपादित उस विचारधारा का भी पुन: दावा है कि भावी भारत का निर्माण इच्छाशक्ति के बिना नहीं किया जा सकता।

इसकी आधी आबादी-महिलाओं की जागरूक भागीदारी, और उनका स्वयं का विश्वास है कि ऐसी भागीदारी के माध्यम से महिलाएं अपनी समानता के प्रतिरोध और बाधाओं को दूर कर सकती हैं और समग्र रूप से समुदाय अपने स्वयं के संस्थानों को बदल सकता है।

सीता (प्रसिद्ध भारतीय पौराणिक महाकाव्य रामायण की नायिका) से, जिसने कम उम्र में अपने पति और बहनोई के साथ चौदह वर्षों तक जंगलों में भटकने का फैसला किया था, लेकिन बाद में जब उसके पति को उसकी निष्ठा पर संदेह हुआ तो वह वापस नहीं लौटी। लेकिन वह उस धरती में समा गई जहां से वह सुश्री प्रतिभा पाटिल माननीय राष्ट्रपति, पूर्व प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी, सुश्री मीरा उमर (अध्यक्ष, निचला सदन), सुश्री किरन बेदी (प्रथम महिला आईपीएस अधिकारी), आदि के पास आई थीं। कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स (अंतरिक्ष यात्री), निरुपमा राव (अमेरिका में भारतीय राजदूत), सुनीता नारायण (कोल्ड ड्रिंक में कीटनाशकों के मुद्दे पर कोको कोला और पेप्सी जैसी दिग्गज कंपनियों को नचाने वाली युवा वैज्ञानिक), सोनिया नेहवाल (बैडमिंटन) चैंपियन) अन्य महिला खिलाड़ियों के साथ, जिन्होंने हाल के एशियाई और ओलंपिक खेलों में पदक जीते हैं और भारत सरकार द्वारा सशस्त्र बलों में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

महिलाओं को स्थायी कमीशन देने के नवीनतम निर्णय ने यह साबित करने में एक और उपलब्धि जोड़ दी है कि शारीरिक और मानसिक रूप से वे पुरुषों की तरह ही मजबूत हैं या शायद इसलिए भी मजबूत हैं। इस तथ्य के बावजूद कि दुनिया भर में उन्हें पुरुषों की तुलना में निम्न दर्जा दिया गया है, उन्होंने ज्ञान की लगभग सभी शाखाओं में उत्कृष्टता हासिल की है। हमें भारतीय साहित्य और पौराणिक कथाओं से ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि मां, पत्नी, बहन, बेटी या भाभी के रूप में अपनी पारंपरिक भूमिका में भी उन्होंने अक्सर पुरुषों की मदद की है जब उन्हें अपने पेशेवर जीवन में किसी समस्या का सामना करना पड़ा हो। यह एक सिद्ध कहावत है कि हर सफल आदमी के पीछे हमेशा एक महिला होती है।

## उद्देश्य

1. महिलाओं और पुरुषों के बीच सामाजिक समानता हासिल करने के लिए सार्वजनिक अधिकारियों और मीडिया के बीच सहयोग को मजबूत करना;
2. मीडिया की लिंग-संवेदनशीलता को बढ़ाना और पत्रकारों के लिए लिंग-जागरूकता प्रशिक्षण जारी रखना

## महिला सशक्तिकरण एवं संचार

महिला सशक्तिकरण की धारणा को अपनाने वाले कार्यक्रमों और नीतियों के कार्यान्वयन से संपूर्ण राष्ट्र, व्यवसाय, समुदाय और समूह लाभान्वित हो सकते हैं। छठी पंचवर्षीय योजना (1980-85) महिला हित में एक मील का पत्थर है क्योंकि यह महिला सशक्तीकरण की अवधारणा का परिचय देती है। महिला एवं विकास. अब टुकड़ों में रणनीतियाँ नहीं, बल्कि एक एकीकृत, यथार्थवादी और पुनर्योजी विकास प्रयास; पिरामिड, जो इतनी देर तक अपनी धुरी पर अस्थिर रूप से घूम रहा था, आख़िरकार सही स्थिति में आ गया है। लक्ष्य अब महिलाओं के लिए आर्थिक स्वतंत्रता के साथ-साथ शैक्षिक उन्नति और व्यापक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों तक पहुंच के संदर्भ में स्पष्ट रूप से देखा गया है। यह लंबे समय से आयोजित किया गया था कि किसी भी विकासात्मक प्रयास का उद्देश्य समाज में महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना होना चाहिए, जिसे केवल बहुआयामी दृष्टिकोण ही प्राप्त कर सकता है; पृथक आँकड़े शायद ही कभी संतोषजनक सूचकांक होते हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

विश्व नेताओं द्वारा महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव को खत्म करने पर सहमति जताने के एक दशक से भी अधिक समय बाद, विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उनका सशक्तिकरण एक आवश्यक तत्व बना हुआ है। "जब तक महिलाओं और लड़कियों को गरीबी और अन्याय से मुक्ति नहीं मिलती, हमारे सभी लक्ष्य - शांति, सुरक्षा, सतत विकास - ख़तरे में हैं," श्री बान महासचिव संयुक्त राष्ट्र ने 8 मार्च को महिलाओं की स्थिति पर आयोग को बताया। जिसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में चिह्नित किया गया है। चीन की राजधानी में शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाले विश्व नेताओं ने घोषणा की कि निर्णय लेने और सत्ता तक पहुंच सहित समाज के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की पूर्ण भागीदारी विकास और शांति के लिए मौलिक है।

भारत में घटता लिंगानुपात निश्चित रूप से चिंताजनक है। यह दुखद है लेकिन सत्य है कि हमारे पितृसत्तात्मक पुरुष प्रधान समाज में जन्म से ही लड़कियों के साथ भेदभाव किया जाता है। उसके साथ "दूसरे आदमी की संपत्ति", अतिरिक्त पेट भरने वाली, एक दायित्व और बोझ के रूप में व्यवहार किया जाता है, और उसे पौष्टिक भोजन, शिक्षा और सामाजिक स्थिति से वंचित किया जाता है। यह मानसिकता केवल तभी बदलेगी जब लड़कियों को भी आर्थिक रूप से मजबूत बनाया जाएगा। साथ ही गृह निर्माता के रूप में उनकी पारंपरिक भूमिका भी कायम है। एक बार जब महिलाएं आर्थिक संबंधित गतिविधियों में शामिल हो जाती हैं, तो पैसा न केवल जीवित रहने का साधन बन जाता है बल्कि यह सशक्तिकरण भी लाता है। त्रासदी यह है कि परंपराएं, कानून और पुरुष व्यवहार महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों के दायरे को सीमित कर देते हैं। अब जब वे आर्थिक रूप से कमजोर हो गए हैं तो उन्हें मां के गर्भ में ही खत्म किया जा रहा है।

सबसे अधिक प्रभावित वर्ग मध्यम वर्ग है, जो अपनी वित्तीय स्थिति में सुधार करके ऊपर की ओर बढ़ने की कोशिश कर रहा है, इसलिए इस समूह का ध्यान उच्च भुगतान वाली नौकरियों या उद्यम स्थापित करने पर है जो उच्च दर का रिटर्न देता है। भारत का उच्च आय वर्ग या धनवान व्यवसायी वर्ग अपनी विरासत को आगे बढ़ाने के लिए कम से कम एक पुरुष उत्तराधिकारी चाहता है। वे तब तक कई बेटियाँ पैदा कर सकते हैं जब तक उनका एक बेटा न हो जाए। सबसे कम आय वर्ग में लड़कियों को बचपन से ही आर्थिक मदद मिलती है। या तो वे मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों में घरेलू सहायिका के रूप में काम करना

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

शुरू कर देते हैं या घर के कामों में माँ की मदद करना और जब माँ आजीविका कमाने के लिए बाहर जाती है तो अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करना शुरू कर देते हैं।

आज की महिलाएं आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। "रसोईघर से आवाज़" संसद और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सुनी जा रही है। महिलाएं आदर, सम्मान और प्यार की हकदार हैं, न कि एक व्यक्ति के रूप में, बल्कि "श्रद्धा, सृजन और मूल्यों के प्रतीक" के रूप में भी, जो आध्यात्मिक और सौंदर्यपूर्ण हैं।5 संचार निरक्षरता मानसिक ठहराव की ओर ले जाती है जबकि संचार साक्षरता दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है और जागरूकता पैदा करती है। किसी भी देश में मजबूत संचार तकनीकों और ज्ञान से लैस महिलाएं स्वचालित रूप से सभी संगठनों, महिला कर्मचारियों, परिवारों और बड़े पैमाने पर हमारे समाज के लिए जीत की स्थिति पैदा कर सकती हैं। संचार प्रौद्योगिकियां अब महिलाओं को विषम घंटों में काम करने, पाली में काम करने, घर पर काम करने, व्यक्तिगत कार्यसूची आदि की सुविधा प्रदान करती हैं। यह सब उन्हें अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करने और अपने करियर के विकास को बढ़ाने में मदद करता है। यह देखा गया है कि जिन संगठनों ने ऐसी प्रणालियाँ लागू कीं, उनकी कर्मचारी उत्पादकता में जबरदस्त वृद्धि हुई है। अच्छे संचार कौशल और तकनीक वाली महिलाएं काम में अधिक सहज दिखाई देती हैं, क्योंकि उनका ध्यान घर पर खाली बैठकर अपना समय बर्बाद करने की बजाय अपनी दक्षता बढ़ाने पर होता है।

यह विशेष रूप से भारत जैसे गरीब और विकासशील देशों और कम समृद्ध समुदायों में महिलाओं की स्वायत्तता और पसंद के संदर्भ में है, अब महिलाओं के नियमित जीवन और उनके रोजगार के अवसरों पर संचार के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करना प्रासंगिक है। ऐसा करने में, उत्पादन के तरीके में वर्तमान क्रांति की विशिष्ट विशेषताओं को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है, जो मुख्य रूप से ज्ञान-केंद्रित है। सूचना प्रौद्योगिकी में प्रौद्योगिकियों का एक समूह शामिल है जो सूचना को केवल संग्रहीत या प्रसारित करने के बजाय सक्रिय रूप से संसाधित करता है। कंप्यूटर, प्रमुख हार्डवेयर और गैर-भौतिक सॉफ़्टवेयर सिस्टम इसके आवश्यक मूल का निर्माण करते हैं। हाल के वर्षों में कंप्यूटिंग, दूरसंचार और उपग्रह प्रौद्योगिकी के कई उपयोगों ने न केवल उन अर्थव्यवस्थाओं में काम की संरचना को बदल दिया है जो इस क्षेत्र में अनुसंधान और विकास के केंद्र में हैं, बल्कि उन देशों में भी हैं जो मुख्य रूप से बाजार अभिविन्यास के लिए इन प्रौद्योगिकियों को अपनाते हैं और अपनाते हैं। . यहां तक कि उन देशों में भी जो आर्थिक दृष्टि से

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

अपेक्षाकृत गरीब हैं, यह विषय पारंपरिक उत्पादन प्रक्रिया के साथ-साथ उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के विपणन को भी काफी हद तक बदल देता है।

इसके अलावा, दूरसंचार क्रांति, जो कंपनियों को अपने विनिर्माण और सेवा उत्पादन के कुछ हिस्सों को भौगोलिक रूप से दूर के स्थानों पर स्थानांतरित करने की अनुमति देती है, कम वेतन वाले देशों के लिए प्रथम विश्व के देशों से कुछ मात्रा में श्रम-केंद्रित स्थानांतरित कार्य प्राप्त करना संभव बनाती है। श्रम के विकसित हो रहे अंतर्राष्ट्रीय विभाजन में अब एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है: अर्धचालक या दूरसंचार उपकरण के उत्पादन से लेकर सेवा-संबंधित सॉफ़्टवेयर प्रोग्रामिंग और डेटा प्रविष्टि तक। इस परिदृश्य में, यह पता लगाना आसान नहीं है कि कुल मिलाकर महिलाओं को सूचना क्रांति से फायदा हुआ है या नुकसान हुआ है। कुछ क्षेत्रों में, महिलाओं, विशेषकर वृद्ध महिलाओं को अब कई पुरानी तकनीकों के अप्रचलित होने का खतरा है, विशेषकर विनिर्माण क्षेत्र में। पारंपरिक श्रम-गहन असेंबली-लाइन कार्य के लिए आवश्यक कौशल ने बहुसंयोजक, संज्ञानात्मक कौशल के लिए नई आवश्यकताओं को जन्म दिया है। इसके विपरीत, सूचना प्रसंस्करण कार्य के प्रसार ने, विशेष रूप से बैंकिंग, वित्त या दूरसंचार में, उन महिलाओं के लिए नए अवसर खोले हैं जो कंप्यूटर-साक्षर हैं और नए कौशल सीखने के लिए पर्याप्त युवा हैं। स्व-रोज़गार, सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं और पुरुषों के लिए नई संभावनाओं का सूत्रपात; फिर भी, पुरुषों की तुलना में महिलाएं, व्यवसाय और विपणन कौशल तक पहुंच की कमी के कारण अपनी क्षमता हासिल करने में विफल रहती हैं।

हालिया विकास विशाल आईटी बुनियादी ढांचे की सुविधा प्रदान करता है, जिसमें नेटवर्क, कनेक्टिविटी, क्लाइंट-सर्विस डिज़ाइन और विभिन्न कॉन्फ़िगरेशन वाले कंप्यूटर शामिल हैं। बाहरी व्यापार जगत से जुड़कर घर पर काम करने का सपना सच हो गया है। लेकिन इसे पूरा करने के लिए हमें महिलाओं को विभिन्न ज्ञान-गहन क्षेत्रों में प्रशिक्षित करना होगा और नेटवर्किंग का ज्ञान रखना होगा। अपने परिवार और करियर की मांगों के बीच महिलाओं का संघर्ष अब घर-आधारित टेलीवर्किंग से हल हो जाएगा। इस प्रक्रिया में, कई मामलों में, उनकी रोजगार स्थिति पूर्णकालिक कर्मचारी से स्व-रोज़गार सलाहकार में बदल जाती है। इससे समय में लचीलापन और बच्चों के साथ रहने का अवसर मिलता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

यदि इस स्वरूप को भारत में दोहराया जा सके तो बालिकाओं के प्रति आक्रोश निश्चित रूप से दूर हो जाएगा। ऐसा नहीं है कि प्रत्येक महिला को किसी एक व्यावसायिक क्षेत्र में प्रशिक्षित किया जा सकता है, लेकिन यदि उनमें मानसिक क्षमता है तो उन्हें किसी एक या अधिक संचार तकनीकों को संचालित करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। अपने कौशल और नेटवर्किंग विशेषज्ञता का उपयोग करके वे अपने घर से भी अच्छा वेतन कमा सकते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी अन्य महिलाओं की भी मदद कर सकती है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) सभी के लिए है और महिलाओं को इसका लाभ उठाने का समान अवसर मिलता है। ज्ञान और आईसीटी के मिश्रण से प्राप्त होने वाले लाभों को समाज के ऊपरी तबके तक ही सीमित रखने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि महिला आबादी के सभी वर्गों तक स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होना चाहिए। जिन क्षेत्रों में आईसीटी महिलाओं के हाथों में अधिक नियंत्रण दे सकती है उनकी सीमा व्यापक है और लगातार बढ़ रही है, पारिवारिक स्तर पर घरेलू मामलों के प्रबंधन से लेकर स्थानीय चुनावों में खड़े होने तक - एक वैज्ञानिक, शिक्षाविद्, अंतरिक्ष यात्री, एक कंपनी के सीईओ बनने तक। और आजीवन सीखने के अवसरों तक पहुंच प्राप्त करना। संचार के अन्य रूपों के साथ अभिसरण में आईसीटी में दूरदराज के इलाकों में रहने वाली उन महिलाओं तक पहुंचने की क्षमता है, जिन तक अब तक कोई अन्य मीडिया नहीं पहुंच पाया है, जिससे उन्हें आर्थिक और सामाजिक प्रगति में भाग लेने के लिए सशक्त बनाया जा सके, और उन्हें सभी महत्वपूर्ण निर्णयों के साथ अद्यतन किया जा सके। मुद्दे जो उन्हें प्रभावित करते हैं.

## उपसंहार

महिलाएं आज सभी पुरुषों के गढ़ों को ध्वस्त कर रही हैं और जीवन के सभी क्षेत्रों में खुद को यदि श्रेष्ठ नहीं तो समान रूप से अच्छा साबित कर रही हैं। इस विषय को तब और अधिक बढ़ावा मिला जब महिलाओं को सशस्त्र बलों में प्रवेश की अनुमति दी गई और उन्होंने इतिहास रच दिया। वे एक नये युग की दहलीज पर खड़े हैं। यह महसूस किया जाना चाहिए कि "हर मुद्दा एक महिला का मुद्दा है" - पानी से लेकर सैन्यीकरण तक, हिंसा से लेकर आर्थिक नियोजन तक, पारिस्थितिकी से लेकर आर्थिक विकास तक। संचार महिलाओं के लिए बाहरी दुनिया के लिए एक सीधी खिड़की खोलता है।6 हमें राजगोपालाचारी ने एक बार जो कहा था, उसे कभी नहीं भूलना चाहिए, "महिलाएं इन दिनों सब कुछ कर सकती हैं, सिवाय पिता बनने के।"

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

# संदर्भ

1. लीलाम्मा देवसिया, वी.वी. देवसिया, सतत विकास के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना। नई दिल्ली, आशीष पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ 27.
2. सरोजिनी नायक, जीवन नायर, भारत में महिला सशक्तिकरण, जयपुर, पॉइंटर पब्लिशर्स, पृष्ठ 297
3. डेनेउलिन, सेवरिन, लीला शाहनी के साथ। 2009. मानव विकास और क्षमता दृष्टिकोण का एक परिचय: स्वतंत्रता और एजेंसी। स्टर्लिंग, वीए: अर्थस्कैन
4. एंडरसन, बी., हॉवेल्स, जे., हल, आर., माइल्स, आई., और रॉबर्ट्स, जे. (संस्करण), नॉलेज एंड इनोवेशनइन द न्यू सर्विस इकोनॉमी, चेल्टनहैम, एल्गर, 2000।
5. बाटलीवाला, श्रीलता, दक्षिण एशिया में महिलाओं का सशक्तिकरण: अवधारणाएं और प्रथाएं, एएसपीबीएई, दिल्ली 1993
6. फाउंटेन, जेन ई. सूचना सोसायटी का निर्माण: महिला, सूचना प्रौद्योगिकी, और डिजाइन प्रौद्योगिकी और सोसायटी, 1999
7. ग्रीन, लिंडसे, एशिया और प्रशांत क्षेत्र में शिक्षा में आईसीटी अनुप्रयोगों में लिंग आधारित मुद्दे और रुझान, शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर यूनेस्को मेटा-सर्वेक्षण, 2005
8. मित्तर, स्वाति, टेलीवर्किंग एंड टेलीट्रेड इन इंडिया कॉम्बिनेशन डाइवर्स पर्सपेक्टिव्स एंड विजन, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली। 24 जून 2000
9. सुब्बैया, अरुचलम, "रीचिंग द अनरीच्ड", हम प्रासंगिक जानकारी तक उन्नत पहुंच के माध्यम से विकासशील दुनिया में ग्रामीण गरीबों को सशक्त बनाने के लिए आईसीटी का उपयोग कैसे कर सकते हैं? आईसीटी और लिंग पर फोरम में प्रस्तुति: अवसरों का अनुकूलन, उआला लम्पुर, 20-23 अगस्त, 2003।
10. लिंग डिजिटल विभाजन को पाटना - मध्य और पूर्वी यूरोप और स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रमंडल में लिंग और आईसीटी पर एक रिपोर्ट यूएनडीपी, 2004
11. महिलाओं की स्थिति: संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान ई-मून द्वारा महिलाओं की स्थिति पर दिया गया एक बयान3 मार्च 2010 को एक बैठक को संबोधित करती महिलाएं

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 1, Jan- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
**(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)**

12. द इनोवेशन जर्नल: द पब्लिक सेक्टर इनोवेशन जर्नल, 13(1), 2008, अनुच्छेद 8।